



क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र चियाँकी पलामू

डाल्टनगंज से 6 किलोमीटर दूर राँची-डाल्टनगंज मार्ग पर बिरसा कृषि विश्वविद्यालय का क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, चियाँकी में स्थित है। वर्ष 1926 में पलामू क्षेत्र के कृषि अनुसंधान हेतु एक फार्म (बिहार प्रांत) में स्थापित हुआ था। बिहार सरकार में यह 1955 में संतरा अनुसंधान केन्द्र, तथा 1968 में फल अनुसंधान केन्द्र बना, जिसमें संतरे के अलावे अमरुद, बेल, बेर, ऑवला व आम पर भी अनुसंधान कार्य प्रारंभ हुआ। 1971 में राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, तथा 1986 में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत यह क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र बना। यह झारखण्ड के कम वर्षा वाले क्षेत्र में कृषि अनुसंधान के लिए चुना गया है। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के तहत इसका कार्य क्षेत्र राज्य के पश्चिमी सात जिलों : गढ़वा, चतरा, पलामू, लातेहार, लोहरदगा, गुमला तथा सिमडेगा के फसल व बागवानी अनुसंधान के लिए कार्य कर रहा है। इसकी कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ निम्न हैं :

फल

- 1. ऑवला : इसकी सात जातियों में से चयन करने के उपरान्त NA 7 किस्म अच्छी पायी गयी है। इसके बाग में परागण पौधे के लिए



- 5 % चकैया के पौधे भी लगाने चाहिए, जिससे फल उत्पादन अच्छा होता है।
2. **आम** : इसकी 12 जातियाँ व संकर आम की 5 जातियों को संग्रहित किया गया है, जिसमें हेम सागर, सुंदर लंगड़ा व अलफांसो (शीध पकने वाली); लंगड़ा व जरदालू (मध्यम समय में पकने वाली), तथा चौसा व आम्रपाली (देर से पकने वाली) अच्छी किस्में पाई गयी है।
 3. **अमरुद** : इसकी 28 जातियों का संग्रह है, जिसमें इलाहाबाद, सफेदा व लखनऊ 49 अच्छी किस्में पायी गयी है। नई किस्मों में बिरसा चियाँकी अमरुद 1, 2 व 3 किस्में विकसित की गई है। इसमें बिरसा चियाँकी 1 लाल गूदेवाली, तथा अन्य सफेद गूदेवाली किस्में है।
 4. **संतरा** : इसकी चार किस्मों में नागपुर व दार्जिलिंग किस्में बेहतर पायी गई है।
 5. **ग्रेपफ्रूट** : इसकी तीन किस्मों (डंकन, मार्श सीडलेस तथा सहारनपुर) में डंकन सर्वोत्तम है।
 6. **मीठा नींबू** : इसकी शर्वती किस्म अच्छी पायी गई है।
 7. **नींबू** : इसमें लाईम पत्ती (Lime Patti) किस्म अच्छी पाई गयी है।
 8. **केला** : इसमें जाइन्ट गर्वनर किस्म खाने के लिए, तथा बेहुला किस्म सब्जी के लिए अच्छी पायी गई है।
 9. **बेर** : इसकी 6 किस्मों में से कड़ाका व बनारसी किस्में अच्छी है।
 10. **पपीता** : इसमें हनीडयू (Honey Dew) किस्म अच्छी पायी गई है।

फसलें

1. **धान** : वर्षाआश्रित उपराऊँ जमीन में वन्दना किस्म अच्छी पायी गई है। तथा मध्यम जमीन में रोपाई के लिए ललाट किस्म अच्छी पाई



गयी है। नींवी जमीन में स्वर्णा (MTU 7029), तथा संकर धान में प्रो एग्रो 6444 किस्म बेहतर पायी गई है।

2. मक्का : इसमें सुआन किस्म इस क्षेत्र के लिए बेहतर पायी गई है।
3. अरहर : इसमें बहार किस्म अच्छी पायी गई है।
4. गेहूँ : K9107 किस्म अन्य किस्मों की तुलना में बेहतर पायी गई है। गेहूँ में जीरो टीलेज (Zero Tillage) से भी बुआई की जा सकती है।
5. चना : परीक्षणों के बाद पन्त जी 114 किस्म अच्छी पायी गई है तथा इस क्षेत्र के लिए अनुसंसित की गयी है।
6. ज्वार : सूखाग्रस्त क्षेत्रों में ज्वार एक सूखा बर्दास्त करनेवाली फसल है। इसमें SPV 1616 किस्म उन्नत पायी गई है।
7. सोयाबीन : बिरसा सफेद सोयाबीन 2 एक नई किस्म है तथा इस क्षेत्र में अच्छी पायी गई है।
8. सरसो : सरसों की शिवानी किस्म अच्छी पायी गई है।
9. अरण्डी (Castor) : इसकी GCH 5 किस्म अच्छी पायी गई है।

वानिकी

शीशम के 10 Provenance में से दारीसाई से लाई गई किस्म की लम्बाई में बढ़वार तथा मोटाई में वृद्धि सर्वाधिक पाया गया है, जो अन्य किस्मों से बेहतर है।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, चियांकी, आत्मा (ATMA) व कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ मिलकर विभिन्न जिलों में On-Farm Research कर



रहा है। जो भी नई किस्म या तकनीक अच्छी पायी जाती है, उसे कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से अग्रीम पंक्ति (Front Line) व अन्य प्रत्यक्षण के लिए अनुसंसित किया जाता है।

छतरपुर प्रक्षेत्र

डाल्टनगंज से करीब 50 किलोमीटर दूर क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र चिंथाकी के अन्तर्गत 25 एकड़ का एक छतरपुर प्रक्षेत्र है। इसमें धान, अरहर, मसूर, गेहूँ, जेट्रोपा व अन्य फसलों तथा फलों का बीजगुणन व अनुसंधान कार्य वर्ष 2007 से शुरू हो गया है।

वैज्ञानिकगण

डॉ बी० के० भगत, अनिल कुमार, एखलाख अहमद, अब्दुल मजीद अंसारी, अखिलेश शाह, प्रमोद कुमार, आर० के० ठाकुर तथा उदय कुमार प्रसाद

Concept & Editing: Prof. B. N. Singh, Director Research
Financial Support: NHM

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

निदेशक अनुसंधान, अनुसंधान निदेशालय, विरसा कृषि विश्वविद्यालय, काँके, राँची – 834006
दुरभाष–0651 – 2450610 (का०), फैक्स–0651–2451011 / 2450850 माबाईल–94319 58566
Email : dr_@rediffmail.com